|| ओ३म् ||

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वेदों की ओर लौटो !

वर्ष २३ अंक १० - अक्टूबर २०२३

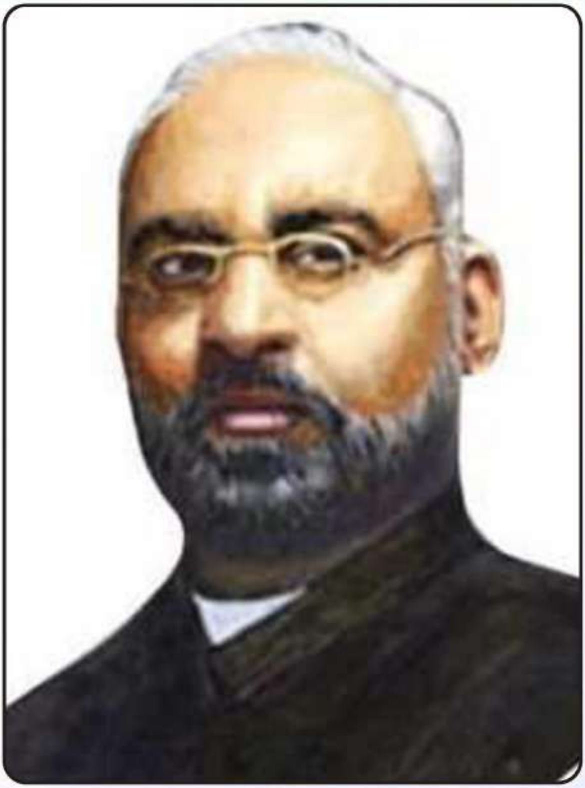

म.दयानन्द के अनन्य भक्त, क्रान्तिकारियों के आश्रयदाता

पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा

जयन्ती दिवस(४ अक्टूबर) पर विनम्र अभिवादन!

- ऐतिहासिक कार्यक्रमों के विभिन्न चित्र -

संसद अधिवेशन में वेद व दयानंद पर विचार व्यक्त करते हुए पूर्वमंत्री डॉ.सत्यपालसिंहजी

वाराणसी में प्रधानमंत्री श्री मोदीजी का स्वागत करते हुए गुरुकुल की छात्रा कु.गार्गी माने

भगूर के एक विद्यालय में आयोजित प्रबोधन सत्र में गीत गाते हुए पं.प्रदीपजी आर्य।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२४ कलि संवत् ५१२४ विक्रम संवत् २०८०

दयानन्दाब्द १९९ भाद्रपद १० अक्टूबर २०२३

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
राजेन्द्र दिवे	**डॉ.ब्रह्ममुनि**	**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९८२२३६५२७२)		(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

लेख/समाचार भेजने हेतु - ई-मेल : nayankumaracharya222@gmail.com

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१)	श्रुतिसुगन्ध	०४
२)	'आरक्षण' एक त्रासदी! (सम्पादकीयम्)	०५
३)	ब्रह्मा, विष्णु व शिव आदि के वास्तविक स्वरुप....	०८
४)	क्रान्तिवीर श्यामजी कृष्ण वर्मा	१२
५)	शोक समाचार	१६

मराठी विभाग

१)	उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी	१७
२)	पितर श्राद्ध (महा-लय)	१८
३)	श्रावणात निनादले वैदिक ज्ञानाचे सूर	२२
४)	वार्ताविशेष	२८
५)	शोक वार्ता	२९

*** प्रकाशक ***

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ-४३१५१५

*** मुद्रक ***

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रू.१००/-

आजीवन रू.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

वैदिक समानता

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः।।

(ऋग्वेद ५/६०/५)

पदार्थान्वय– हे मनुष्यो! जैसे (**स्वपाः**) श्रेष्ठ कर्म का अनुष्ठान करनेवाला (**युवा**) युवावस्था युक्त और (**रुद्रः**) अन्यों का रुलानेवाला (**पिता**) पालक जन और (**एषाम्**) इनकी (**सुदुघा**) उत्तम प्रकार मनोरथ की पूर्ण करनेवाली (**सुदिना**) सुन्दर दिन, जिससे वह (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष के सदृश्य बुद्धि (**मरुद्भ्यः**) मनुष्यों के लिये विद्यादि दान देती है, वैसे (**अज्येष्ठासः**) ज्येष्ठपन(बडप्पन)से रहित(**अकनिष्ठासः**)कनिष्ठपन से रहित (**एते**) ये (**भ्रातरः**) बन्धु जन (**सौभगाय**) श्रेष्ठ ऐश्वर्य होने के लिये (**सम्, वावृधुः**) बढते है।

भावार्थ – जो मनुष्य पूर्ण युवावस्था में विद्याओं को समाप्त कर और सुशीलता को स्वीकार कर बहुत ही उत्तम हुए उत्तम स्वभाव युक्त स्त्रियों का विवाह द्वारा स्वीकार कर के प्रयत्न करते हैं, वे ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर आनन्दित होते है।

।।ओ३म्।।

संशितम् इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम्।

आर्य सभ्यता व संस्कृति के प्रतीकस्वरुप

पावन विजयपर्व

***विजयादशमी* (दशहरा)**

के उपलक्ष्य में

सभी देशवासियों को

हार्दिक मंगलमय शुभकामनायें।

सम्पादकीयम्...

आरक्षण - एक त्रासदी

जिस मनुष्यकृत जातिव्यवस्था के कारण वर्षों से समाज व देश का काफी नुकसान हुआ और आज भी हो रहा है, उसी को आधार बनाकर विगत कई वर्षों से आरक्षण की सुविधाएं दी जा रही हैं। मनुष्य का आर्थिक स्तर भले ही ऊंचा होता हो, लेकिन सामाजिक विषमता दूर नहीं हुई है, तो क्या फायदा? इसलिए आरक्षण का प्रावधान करते समय ही देश के नेताओं ने जन्माधिष्ठित जाति का आधार न लेते हुए केवल उसके आर्थिक पिछड़ेपन को आधार बनाया होता, तो मानवसमूह से जातिप्रथा कब की नष्ट हुई होती और आर्थिक समृद्धि भी प्राप्त होती। तब आज जो समस्याएं उत्पन्न हो रही है, वे न होती।

महाराष्ट्र के दिवंगत मुख्यमंत्री श्री विलासराव देशमुखजी का एक पुराना वीडियो आजकल वायरल हो रहा है। एक विशाल समारोह में सभी दलों के नेताओं के सम्मुख वे आर्थिक आधार पर आरक्षण की बात करते हुए कहते हैं-'जातिगत आरक्षण के कारण समाज व देश का भारी नुकसान होता है। इसके कारण ही लोग अपनी जातियां ढूंढ कर निकालते हैं और इससे समाज में भेदभावनाओं का बखेड़ा खड़ा होता है।' श्री देशमुख जी की बात बिल्कुल सही है। आर्य समाज यही विचार कितने ही वर्षों से करते आ रहा है। पंथ या जातिप्रथा मानवता के माथे पर कलंक है। इससे समाज आपस में विभाजित होकर उसमें भेदभावनाओं की दीवारें खड़ी होती है।

जन्मगत जाति पर आधारित आरक्षण राष्ट्र की एकता व अखंडता के लिए सबसे बड़ी बाधा है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है मणिपुर में घट रही घटनाएं! वहां पर चल रहा आरक्षण का मुद्दा ही तो हिंसा, आगजनी व भयावह दुरवस्था का कारण बन चुका है। गत सात -आठ महीनों से वहां सामान्य लोगों का जीना मुश्किल हो चुका है । हजारों परिवार विस्थापित हो चुके हैं। वहां पर एक आदमी दूसरे का क्रूरतम शत्रु बन गया है। अब यह आग धीरे-धीरे देश के कोने कोने में पहुंच रही है। गुजरात में पाटीदार, हरियाणा में जाट, आंध्र प्रदेश में कुप्पू, राजस्थान में गुर्जर और अब महाराष्ट्र में मराठा समाज आरक्षण की दुंदुभि बजा रहा है। इस तरह भारतीय समाज आरक्षण के कारण आपस में टकराता व बंटता रहेगा, तो देश का क्या होगा ? इस पर कोई भी विचार करने के लिए तैयार नहीं है। राजनेता आरक्षण का गाजर दिखाते है और सत्तास्वार्थ का मजा लूटते हैं।

यदि पहले से ही आरक्षण की नीतियां आर्थिक आधार पर होती, तो आज ये मुसीबतें खड़ी ना होती, जो कि देश के लिए त्रासदी सी बन गई है। देश की स्वतंत्रता के बाद जब पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने की बात चल पड़ी, तो उस समय जन्मगत आधार के बजाय आर्थिक आधार लिया होता, तो यह संघर्ष ही खड़ा न होता।

रही बात रही बात आरक्षण के मर्यादा की। जो वर्ग आरक्षण के माध्यम से लाभान्वित होकर समृद्ध हो चुका है, उसका आरक्षण अब बंद होना चाहिए। वस्तुतः यह बात आज की व्यवस्था को अटपटी लगती है, लेकिन है तो सभी के हित की ही ! स्वतंत्रता के बाद आरंभ में दस वर्ष तक ही आरक्षण का प्रावधान था। लेकिन उसमें धीरे-धीरे १०-१० वर्षों की बढ़ोतरी की गई। अब इसे रोकने के लिए कोई तैयार नहीं है । क्योंकि इस जातिगत आरक्षण के पीछे जहां लोगों की स्वार्थवृत्ति छिपी है, वहीं राजनीतिक दलों की स्वार्थनीति भी! जो इसके विरोध में बात करेगा, उसे जातिसमूह के वोट नहीं मिलेंगे ? तब तो आरक्षण का यह खेल कभी समाप्त ही नहीं होगा!

देश के संविधाननिर्माता डॉ.बाबासाहब अम्बेडकरजी ने भी आरक्षण लागू करते समय कहा था - 'हर दस वर्ष में आरक्षण की समीक्षा होनी चाहिए। जिनको आरक्षण दिया जा रहा है, क्या उनकी स्थिति में सुधार हुआ या नहीं?' उन्होंने यह भी कहा था कि 'यदि आरक्षण देने से किसी वर्ग का विकास हो रहा हो, तो उसके आगे की पीढ़ी को इसका लाभ नहीं होना चाहिए! अतः उसका आरक्षण बंद हो जाय, क्योंकि आरक्षण का मतलब बैसाखी नहीं है, जिसके सहारे आजीवन जिंदगी जिया जाए। यह तो बस एक आधार है विकसित होने का!'

डॉ.अम्बेडकर जी के इन उच्च विचारों को क्या ये आरक्षण के उपभोक्ता लोग, बुद्धिजीवी वर्ग या सभी राजनेता स्वीकारने के लिए तैयार हैं? आज तो एक व्यक्ति आरक्षण के आधार पर खासी नौकरी प्राप्त करता है। पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत बनाता है। अपने बच्चों को शिक्षा व नौकरी दिलाने में वह अब पूरी तरह से समर्थ बन जाता है, तब उसे स्वेच्छा से ही अपना आरक्षण बंद करना चाहिए। इतना ही नहीं इससे भी आगे बढ़कर अपनी जन्मगत जाति भी समाप्त करनी चाहिए। क्या शासनव्यवस्था इस प्रकार के नियम व कानून बना सकती है? अथवा समाज में जो भी आर्थिक दृष्टि से गिरे हुए बच्चे हैं, उन्हें शिक्षासुविधाएं दिलाने या फिर उन्हें सहायता करने हेतु कोई आगे हाथ बढायेगा? आज तो मनुष्य की यह दुष्प्रवृत्ति ही बन

चुकी है कि एक बार जब वह गरीबी से उठकर धनवान बन जाता है, तो वह अपने पुराने दुर्दिनों को भूल जाता है। अपने से निचले लोगों से वह संपर्क या व्यवहार भी करना नहीं चाहता। तो फिर आरक्षण से लाभान्वित होने का मतलब ही क्या?

एक ओर हम जातिप्रथा के निर्मूलन की बातें करते हैं, तो दूसरी ओर इसी को जाति का ही सहारा लेकर आरक्षण का लाभ उठाना चाहते हैं, इससे तो फिर जातियां और बढ़ती ही जाएगी। आजकल हमारे राजनेता जातिगत आधार पर ही देश की जनगणना करने की बात कर रहे हैं । इससे क्या होगा? समग्र देश में ओपन,ओबीसी ईबीसी, एस्सी, एनटी. आदि जातियों में देश विभक्त होगा । फिर देश की एकता और अखंडता कैसे सुरक्षित रह पाएगी ? अब तो संघ, भाजपा सहित सभी सत्तापक्ष व विपक्ष के सभी नेता लोग आरक्षण के ही पक्ष में बातें कर रहे हैं। रा.स्व.संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवतजी ने भी हाल ही में आरक्षण के समर्थन में कहा- 'जब तक समाज में भेदभाव विद्यमान है, तब तक आरक्षण रहेगा ही!' इन भेद भावनाओं को क्या वे मिटाना चाहते हैं? तो फिर इसके मूल की भूल को समझना व सुधारना होगा। जिस जन्मगत वर्णव्यवस्था ने वर्षों पूर्व से ऊंच-नीच की दीवारें खड़ी की है, क्या उसे तोड़ने के लिए भागवत जी व संघपरिवार तैयार है? क्या उन दलित, आदिवासी, पिछड़े समाज को वेदविद्या, धार्मिक कर्मकांड आदि का अधिकार देने हेतु आगे आ सकेंगे? इसके लिए पहले हमें अंतर्मन में छिपी हुई छुआछूत की दुर्भावना को दूर करना होगा। सालों से अपने ही अछूत भाई जो विद्या,ज्ञान, धर्म कर्म एवं अधिकारों से वंचित है, उन सभी को अपनाना होगा। आर्थिक आरक्षण से उनके पास धन तो आ गया ,लेकिन सामाजिक समता अभी नहीं आयी। उनके साथ बंधुत्व की भावनाएं कब स्थापित होंगी? आज भी बहुत सारे जगह पर मंदिरों में दलितों को प्रवेश नहीं है! उन्हें अपना समझकर रोटी- बेटी व्यवहार करने में कोई तैयार है ? जब हमारे अंतरंग में ये दुर्भावनाएं रहेगी, तो भेदभाव भी समाप्त ही नहीं होगा और आरक्षण भी कभी समाप्त नहीं होगा। इसलिए भागवत जी समेत सभी राजनेताओं, सभी धर्मगुरुओं या सुधारवादियों को निष्पक्ष भाव से विचार करना होगा और महर्षि दयानंद के मन्तव्यों के अनुसार भेदभावविरहित आर्य राष्ट्र व आदर्श समाज की स्थापना करने हेतु कदम उठाने होंगे। क्योंकि वेद ने यही कहा है -

अजेष्ठासो अकनिष्ठास एते
सं भ्रातरो वावृधो सौभगाय।

- नयनकुमार आचार्य

ब्रह्मा, विष्णु व शिवादि के वास्तविक स्वरुप

– महेन्द्र प्रताप यादव

ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा गणेश ये सब परमपिता परमात्मा के गौणिक नाम हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कायाकल्प करनेवाले अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम समुल्लास में यह सिद्ध किया है। इसके अतिरिक्त ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव (शिव) नाम के ऐतिहासिक महापुरुष भी हुए थे। 'कालान्तर में इन लोगों के स्मरणार्थ राजासनों के नाम पड गये। जो उन पर बैठता, वही ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव हो जाता था।' ये राजासन महाभारत काल तक चलते रहे। कालान्तर में समाप्त हो गये। इसी प्रकार इन्द्र, कुबेर तथा जनकादि राजासन तथा वसिष्ठ, विश्वामित्र, नारद इत्यादि देवर्षि–आसन भी थे। जैसे पुराणियों में शंकराचार्य, गोरखनाथ तथा कीनाराम इत्यादि के आसन (पीठ) चल रहे हैं। प्रथम इन्द्र त्वष्टा के पुत्र थे। इसी प्रकार कुबेर विश्रवा के तथा जनक निमि के पुत्र थे। इतिहास के अतिरिक्त विष्णु, शिव तथा गणेश रुपक तथा प्रतीक भी हैं। **नवीन पुराणकारों ने प्रतीक रुपक तथा इतिहास के रुप में वर्णन कर अनर्थ कर डाला।** आइये इन पर पृथक्–पृथक् स्वल्प बुद्धि से विचार करें।

* **ब्रह्मा** – ये आदि सृष्टि में उत्पन्न हुए थे। इनकी पत्नी का नाम सरस्वती था। ब्रह्मा के उपरान्त अन्य ब्रह्मा पुष्कर के राजा थे। ब्रह्मा तथा सरस्वती चारों वेदों के ज्ञाता की उपाधि थी। ये चारों वेद उनके ४ मुंह के समान थे। ब्रह्मा नाम के राजा भी होते रहे तथा प्रजा में भी चारों वेदों के ज्ञाता को ब्रह्मा कहा जाता था। आदि ब्रह्मा विराट् के पिता थे। ब्रह्मा का रुपक नहीं मिलता है।

* **विष्णु** – विष्णु के पिता का नाम विराट् तथा पत्नी का नाम लक्ष्मी था। ये तिब्बत के वैकुण्ठ के राजा थे। इतिहास के अतिरिक्त विष्णु राष्ट्र का प्रतीक है। आर्ष ग्रन्थ में **'राष्ट्रं वै विष्णुः'** कहा गया है। विष्णु के ४ हाथ है, जिनमें क्रमशः शंख, चक्र, गदा तथा पद्म हैं। विष्णु कमल पर खडा रहता है। शिर के ऊपर सर्प रहते हैं तथा सर्पों पर सोता है और लक्ष्मी उसका पैर दबाती है। यह क्षीरसागर में सोता है। शंख घोषणा वा विजय, चक्र प्रगति का, गदा आयुध का, पद्म (कमल) धन का प्रतीक है।

सर्प कडी सुरक्षा का, लक्ष्मी धन का, दबाना पुष्टि का, पैर आधारशिला का तथा क्षीर सागर आस-पास के देश का प्रतीक है। इन प्रतीकों को इतिहास के विष्णु से पृथक् रखना चाहिए। ऐतिहासिक विष्णु के पास गरुड(गरुड सदृश) विमान था। कहीं आने जाने के लिए गरुड का प्रयोग करते थे।

* **शिव** :- शिव अग्निष्वात्ता के पुत्र थे। इनकी पत्नी का नाम दुर्गा तथा पार्वती था। दुर्गा वा पार्वती के विमान का नाम व्याघ्र या सिंह यान था। प्रथम शिव भूटान के राजा थे, इसलिए इन्हें भूतनाथ कहा जाता है। इन्होंने सुनीति, धर्म, सच्चाई तथा सच्चरित्रता इन गुणों से युक्त होकर ३६ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने के कारण रुद्र की उपाधि प्राप्त की थी। प्रथम शिव की राजधानी कैलास थी। अन्य शिव काशी तथा कन्नौज के भी राजा थे। शिव अत्यन्त ज्ञानी थे, जिससे उनकी ज्ञानाक्षि खुल गयी थी। मनुष्य में ज्ञानाक्षि को ही तीसरी आंख कहते हैं। जब ज्ञानाक्षि खुलती है, तो काम भस्म हो जाता है। काम का कोई देवता नहीं होता, वरना कामवासना को ही काम कहा गया है। शंकर जी ने अपनी कामवासना को जीत लिया था। शिर से जलधारा का तात्पर्य ज्ञान की धारा से है अर्थात् वे हर समय ज्ञान रस प्रवाहित करते रहते थे। विभूति धारण का तात्पर्य शंकर जी बडे ऐश्वर्य वाले थे तथा योगाभ्यास से अनेक विभूतियों को प्राप्त किए थे। शिर पर चन्द्रमा का तात्पर्य वे बडे शान्त स्वभाव के थे। सर्प धारण का तात्पर्य वे विपत्ति सहनेवाले थे। ये दानी, तपस्वी तथा अप्रतिम शक्तिशाली थे। इनके पास पाशुपतास्त्र तथा शूलायुध या शूलास्त्र थे। इनके पुत्र गणेश तथा कार्तिकेय थे। गणेश मनुष्य थे, उनका मुख हाथी के समान नहीं था। कार्तिकेय छहों शास्त्रों(दर्शनों) के ज्ञाता थे। ये ही शास्त्र उनके ६ मुंह थे। शिव मनुष्य थे। सर्प, चन्द्रमा, गंगा(जलधारा) तथा विभूति चित्र में दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उनके शरीर पर ये चीजें नहीं थीं। उनमें आन्तरिक गुण थे। तीसरी आंख का होना भी गुण था न कि शंकर जी के पास तीन आँखे थे। उनके पास भी हमीं लोगों के समान दो आँखे ऊपर से थी। भीतर ज्ञान की तीसरी आँख खुल गयी थी। पौराणिकों ने तो शिव जी को जो कि ऐतिहासिक महापुरुष हुए थे, उन्हें डमरु, त्रिशूल, सर्प, चन्द्रमा, गंगा, विभूति तथा तीसरी आँख प्रदर्शित कर मदारी वा बरुआ बना दिये है। ऐसे

चित्र देखकर प्रबुद्ध वर्ग में शंका उत्पन्न हो जाती है कि ऐसा विचित्र व्यक्ति भी कभी हुआ था वा नहीं? ऐसे रेखांकनों से अबुद्ध वर्ग में पाखण्ड तथा प्रबुद्ध वर्ग में घृणा भी उत्पन्न हो सकती है। यहां तक ऐतिहासिक राजा शिव के विषय में लिखा गया है। अब शिव के रुपक को लिखा जा रहा है। इतिहास तथा रुपक को पृथक् रखना चाहिए।

शिव परमात्मा को कहते हैं। शिव सबका आदि कारण है। उसका वंश कोई नहीं है। वह अपने आप अकेला है। इसी से वह दिगम्बर कहलाता है। सत्, रज तथा तम ही त्रिशूल तथा सोना, चांदी तथा लोहे के त्रिपुर हैं। जिनसे बने जीवात्मा, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीरों में रहता है। मोक्षावस्था में परमात्मा इन शरीरों को नष्ट कर देता है। जिससे उसे त्रिपुरारि कहते हैं। धर्म ही वृषभ है। धर्म ही आनन्द की वर्षा कराता है। शिव(परमात्मा) वृषभारुढ(धर्मारुढ) है। जो धर्माचरण करता है, वह आनन्द को प्राप्त करता है। नाना कर्म ही उसकी जटाएँ हैं। वेदत्रयी ही उसके नेत्र(ईक्षण शक्ति) हैं। यह शिव का रुपक हुआ। रुपक तथा इतिहास पृथक्-पृथक् होते हैं।

* **गणेश** - ये शिव जी के पुत्र थे। इनका सम्पूर्ण आकार मनुष्यवत् था, अर्थात् ये मनुष्य थे। इतिहास के अतिरिक्त गणेश (गण=गणराज्य, ईश-स्वामी) राष्ट्राध्यक्ष का प्रतीक है। गणेश (राष्ट्राध्यक्ष तथा सम्राट) के वर्णन में निम्नलिखित बातें वर्णित की जाती हैं -

तीखी आंखें, बडे-बडे कान, लम्बी नाक, भारी पेट तथा निचले भाग में मूषक निम्न के प्रतीक हैं-

राष्ट्राध्यक्ष को चाहिए कि शत्रुओं पर तीखी आँखे रखें अर्थात् प्रत्येक कार्य को सावधानी से देखें। लम्बे कान अर्थात् शत्रुओं की बात सुनते रहें। लम्बी नाक अर्थात् हानिकारक पदार्थ को दूर फेंक कर दूर का लाभ कर पदार्थ ग्रहण करना, भारी पेट अर्थात् सभी प्रकार की बातें जानकर पचा लेना तथा अपने नीचे मूषक अर्थात् गुप्तजन रखना, जो कि शत्रुओं की रहस्यमय बातों को मूष(चुरा) करके ले आएँ। राष्ट्राध्यक्ष को गणेश के वर्णन के अनुरुप बनना चाहिए। गणेश पूजन का तात्पर्य राष्ट्राध्यक्ष (सम्राट्) की आज्ञा के अनुरुप चलना है, देशभक्ति करना है। सभी जनों को विशेषकर आर्यजनों को चाहिए कि वे इतिहास, रुपक तथा प्रतीक को पृथक्-पृथक् रखकर सत्यासत्य से जनता को अवगत करावें।

*** ब्रह्मा, विष्णु, शिव के विषय में महर्षि का चिन्तन –**

विष्णु वैकुण्ठ में रहने वाले थे और वहीं उनकी राजधानी का नगर था। महादेव कैलाश के रहने वाले थे। कुबेर अलकापुरी के रहने वाले थे। यह सब इतिहास केदारखण्ड में वर्णन किया गया है। हम स्वयं भी इन सब ओर घूमे हुए हैं।

इस समय भी भरतखण्ड में हमारे कथन का प्रमाण मिलता है। देहली में इन्द्रप्रस्थ नामी स्थान था, वहां इन्द्र का राज्य था। पुष्कर और ब्रह्मावर्त में ब्रह्मा ने राज्य किया। काशी, उज्जैन और हरिद्वार आदि में महादेव जी का राज्य था।

(‘उपदेशमंजरी’ के दशम उपदेश से)

– पहाडपुर(आर्यनगर),
हेतमपुर, वाराणसी

म.दयानन्द सरस्वती २०० वीं जयंती उत्सव

भारत सरकारद्वारा उच्चस्तरीय समिति गठित

- महाराष्ट्र सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी सदस्य बनें -

केंद्र सरकार की ओर से इस वर्ष मनाये जा रहे ‘महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी समारोह’ हेतु उच्चस्तरीय समिति का गठन हुआ है। प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदीजी की अध्यक्षता में स्थापित इस केन्द्रीय उच्च स्तरीय समिति में देश की विभिन्न प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों तथा अन्य संस्थाओं से एक–एक सदस्य एवं प्रतिष्ठित आर्य कार्यकर्ताओं को भी सदस्य के रुप में इसमें शामिल किया है। इस समिति में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी को भी सदस्य बनाया गया है।

दि.१७ अगस्त २०२३ को केन्द्र शासन के अन्तर्गत संस्कृति मंत्रालय द्वारा उपरोक्त राजपत्र (गॅझेट) प्रसिद्ध किया गया है। इसमें लगभग ९७ सदस्य सम्मिलित हैं। वरिष्ठ सदस्य के रूप में देश के गृहमंत्री श्री अमितजी शाह, महिला व बालकल्याण मन्त्री श्रीमती स्मृति इराणी, संस्कृति मन्त्री श्री जी.किशन रेड्डी, विपक्षदल के नेता श्री मल्लिकार्जुनजी खडगे, गुजरात के राज्यपाल डॉ.देवव्रतजी आचार्य, योगगुरु बाबा रामदेवजी, पूर्वमन्त्री डॉ.सत्यपालसिंहजी, सांसद स्वामी सुमेधानंदजी, विनय आर्यजी आदियों का समावेश है। इन सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन..! श्री योगमुनिजी के नेतृत्व में महाराष्ट्र में म.दयानन्द द्विजन्मशताब्दी समारोह का भव्य आयोजन करने तथा उससे जुडी अन्य गतिविधियों को बढाने में पूर्ण सहायता मिलेगी।

क्रान्तिवीर : श्याम जी कृष्ण वर्मा

– (स्मृतिशेष)आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

क्रान्तिवीर श्याम जी कृष्ण वर्मा ने एक बार कहा था कि क्रान्तिकारी, देशसेवी किसी भवन के कलश, उसके शिखरों पर नजर आनेवाले, सजाकर संजोए गए पत्थर नहीं, ये तो आजादी के भवन की वे आधारशिलाएं हैं, जिन्हें सामान्यतः जानते हुए भी कोई देख नहीं पाता। उनकी बात अक्षरशः सत्य है, क्योंकि यदि क्रान्तिकारियों ने अपने जीवनों को उत्सर्ग न किया होता, तो आज हम कदापि स्वतन्त्र भारत में सांस नहीं ले रहे होते। ये क्रान्तिकारी ही देश की नींव के पत्थर हैं। स्वयं श्याम जी कृष्ण वर्मा एक ऐसे महानायक थे, जिनका नाम भले ही आज आम जनता न जानती हो मगर उनके प्रयासों से ही वास्तव में हमें आजादी मिल पाई है, क्योंकि वे लगभग समस्त क्रान्तिकारियों के आदि गुरु थे। संयोग देखिए कि इस वीर का जन्म 'क्रान्तिवर्ष' सन् १८५७ में ही हुआ, जिसे भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम कहा जाता है। इनका जन्म ४ अक्तूबर, १८५७ को करसन जी भंसाली के यहाँ हुआ। इनके पिता गुजरात राज्य के कच्छ प्रदेश में माण्डवी नगर के निकट विलायल गांव के निवासी थे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि तथा अत्यधिक मेधावी थे, मगर निर्धन परिवार से सम्बन्ध होने के कारण इन्होंने धनाढ्य लोगों के यहाँ काम करके अपना जीवन-निर्वाह किया। ऐसे ही लोगों ने उन्हें अध्ययन के लिए सहयोग दिया और अपने परिश्रम के कारण वे अध्ययनरत रहे। सन् १८७४ में महर्षि दयानन्द जी मुम्बई में आचार्य कमलनयन जी से शास्त्रार्थ कर रहे थे, उसी समय श्याम जी का उनसे सम्पर्क हुआ। महर्षि जी ने उनमें छिपी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें संस्कृत तथा प्राचीन साहित्य का गहन अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। प्रतिभा के धनी श्यामजी ने महर्षि के आग्रह पर संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया और जल्दी ही वे अंग्रेजी के साथ-साथ संस्कृत के भी प्रकाण्ड पण्डित बन गए। भाषण शैली और लेखनी की दृष्टि से भी कोई उनका सानी नहीं था।

उन्हीं दिनों आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक श्री मोनियर विलियम अपने

विश्वविद्यालय के लिए एक ऐसे संस्कृत के पण्डित खोज में मुम्बई आए, जिसे संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा पर भी समान अधिकार हो। विलियम के आग्रह पर महर्षि दयानन्द जी ने वर्मा जी को इंग्लैण्ड भेजा और वहां जाते ही आक्सफोर्ड में उनकी विद्वत्ता का डंका बजने लगा। उन्होंने अध्यापन के साथ-साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और एम.ए. करने के साथ-साथ वे बैरिस्टर भी बन गए। उन्होनें अपनी अद्भूत तार्किक बुद्धि से विदेशी विद्वानों की अनेक शंकाओं का निवारण किया। उन्होंने वैदिक एवम् आर्य सभ्यता की प्राचीनता और श्रेष्ठता से सभी को परिचित किया। सन् १८८१ में जर्मनी की राजधानी बर्लिन में प्राच्य विद्याओं का एक अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हुआ, जिसमें श्याम जी ने भी भाग लिया। उनके शोधपत्र का विषय था-'संस्कृत एक जीवन्त भाषा है।' इस शोध पत्र से उनकी धाक जम गई। इस बीच उनका विवाह १८७५ में एक धनी सेठ छब्बीलदास लल्लू भाई की सुपुत्र भानुमती से हो गया। परमात्मा की कृपा से उन्हें सहधर्मिणी भी उनके विचारों के अनुकूल ही मिली तथा उन्होंने वर्मा जी के प्रत्येक कार्य में सक्रिय सहयोग दिया।

आप सन् १८८५ तक इंग्लैण्ड में रहे और इस दौरान निरन्तर उनका पत्र-व्यवहार महर्षि दयानन्द जी के साथ होता रहा और यह पत्र-व्यवहार संस्कृत में ही होता था। जब वे १८८५ में पुनः भारत लौटे, तो उनका सर्वत्र स्वागत हुआ। अब योग्यता के आधार पर रजवाडों ने उन्हें अपने यहाँ उच्च पद देने की पेशकश की, तो उन्होंने उदयपुर, रतलाम आदि राज्यों में कार्य किया। मगर महर्षि दयानन्द जैसे क्रान्तिकारी के इस शिष्य को अंग्रेजों के गुणगान गाने वाले उन रजवाडों के यहाँ नौकरी करना रास नहीं आया और उन्होंने अन्ततः उससे मुक्ति पा ली। सन् १८८७ में जब प्लेग फैला तथा ब्रिटिश राज्य सत्ता ने लोकमान्य तिलक पर अभियोग चलाया, तो इसका वर्मा जी के मानस पर गहरा प्रभाव पडा। अतः उसी वर्ष वे पुनः इंग्लैण्ड चले गए। उन्हें यह पक्का विश्वास था कि गुलाम मानस से परिपूर्ण रजवाडों के यहाँ रहने से नहीं, बल्कि भारत से बाहर रहकर क्रान्तिकारी गतिविधियों को समग्रता के साथ चलाया जा सकता है। विदेश जाते ही उन्होंने वहां के बुद्धिजीवियों की बैठक बुलाई और 'इण्डियन होमरुल सोसाइटी' स्थापित की, जिसका उद्देश्य भारत को

स्वतन्त्रता दिलाना था। इसी उद्देश्य से उन्होंने 'सोशियालोजिस्ट' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। यही नहीं उन्होंने १८०५ में २५ कमरों का एक मकान खरीद कर ऐतिहासिक 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की। उन्होंने घोषणा की कि जो छात्र अंग्रेजों की नौकरी न करने की तथा तन, मन, धन से देशसेवा का व्रत लेंगे, ऐसे युवकों को प्रतिवर्ष दो हजार रुपये छात्रवृत्ति के रुप में दिए जायेंगें। इण्डिया हाऊस की स्थापना वर्मा जी का ऐसा ऐतिहासिक कार्य था, जिससे निश्चित रुप से स्वतन्त्रता संग्राम को एक सही दिशा मिली। डॉ.हरदयाल, मैडम कामा, विपिनचन्द्र पाल, मदनलाल ढींगरा तथा वीर सावरकर आदि ने 'इण्डिया हाउस' जाकर तथा वर्मा जी के सानिध्य में ही क्रान्तिकारी गतिविधियों को सक्रियता प्रदान की। इण्डिया हाउस प्रत्येक क्रान्तिकारी के लिए शरणस्थली और वर्मा जी को प्रेरणास्रोत बन गए। यह स्थान क्रान्तिकारियों के लिए किसी मन्दिर की तरह पावन बन गया। कहते हैं कि यहीं पर लेनिन, म.गोर्की, अलडर्ड, महात्मा गाँधी तथा भाई परमानन्द आदि अनेक नेता भी वर्मा जी से विचार-विमर्श करने के लिए आए। महात्मा गाँधी वर्मा जी को प्रभावित नहीं कर पाए, क्योंकि वर्मा जी का मानना था कि केवल भीख मांगकर स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती है। **उनका मानना था कि काँग्रेस की स्थापना अंग्रेजों ने इसलिए की ताकि तुष्टिकरण की नीति चलती रहे और १८५७ जैसी क्रान्तिकारी घटना न घट सके।** उन दिनों कांग्रेस में भी दो गुट थे- गरम दल और नरम दल। वर्मा जी गरम दल के हिमायती थे, क्योंकि महर्षि दयानन्द जी के सम्पर्क में रहकर उन्हें स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा मिली थी। 'स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है', तिलक के इस उद्घोष को पूर्णता देने के लिए ही, उनके सम्पर्क में आए। वे प्रत्येक क्रान्तिकारी को प्रेरित करते थे। सावरकर जी ने उनके बारे में बताया था कि पण्डित जी हर दृष्टि से उन्नत पक्ष के पक्षधर थे एवं प्रगतिशील थे। धार्मिक पक्ष हो या समाज-सुधार, हिन्दू समाज को जाति-पाँति की कुरीतियों से मुक्त कराना या हिन्दुस्तान के इतिहास का पुनर्लेखन या शिक्षा और स्वाधीनता का पक्ष और आर्थिक विषमताओं का समाधान-वर्मा जी क्रान्तिकारी चेष्टाओं के द्वारा ही समाधान पक्षधर थे।

श्यामजी की इन समस्त गतिविधियों की भनक ब्रिटिश सरकार को भी मिली और सन् १८०७ में वहां

की पार्लियामेण्ट में उनके विरुद्ध कार्रवाई करने की मांग भी उठी।

अब अंग्रेज गुप्तचरों की इन पर कडी नजर रहने लगी। सुरक्षा की दृष्टि से वे इंग्लैण्ड छोडकर पेरिस चले गए। उनके जाने के बाद 'इण्डिया हाउस' का समस्त कार्यभार सावरकर जी ने संभाल लिया। पेरिस में उनकी मुलाकात श्रीमती रुस्तम जी भीका कामा से पुनः हुई, जो वर्मा जी के एक मात्र भाषण की प्रेरणा से ही क्रान्तिकारी बन गई थीं। वे अपने उपचार के लिए वहां गई हुई थी, अतः हमारे नायक वहां भी मैडम कामा और राव राणा जी के साथ मिलकर पुनः क्रान्तिकारी गतिविधियों में लग गए। मैडम कामा वहां 'वन्दे मातरम्' और 'तलवार' नामक दो पत्र निकालती थीं। वर्मा जी सन् १८१४ तक पेरिस में रहे, मगर प्रथम विश्वयुद्ध छिड जाने के कारण इंग्लैण्ड की सरकार का दबाव पडने के कारण उन्हें फ्रांस ने अपने यहाँ रहने देना उचित नहीं समझा और वे स्विट्जरलैण्ड होते हुए जैनेवा चले गए। जब वे स्विट्जरलैण्ड में थे, तो जवाहरलाल नेहरु जी ने इनसे भेंट की थी तथा इन्हें 'बूढे शेर' की संज्ञा दी थी। वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक भारत मां की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते रहे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा एक ऐसे नरपुंगव थे, जिनके हृदय में देशप्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। वे इण्डिया हाउस के संस्थापक,इण्डियन होमरुल सोसाइटी के जनक,इण्डियन सोशियोलौजिस्ट पत्रिका के प्रणेता ही नहीं, बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऐसे अनन्य शिष्य थे, जिन्होंने ब्रिटेन में रहकर अपने पुरुषार्थ और प्रतिभा के बल पर ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने की सेन्ध लगाकर उसे ध्वस्त करने की सर्वप्रथम नींव रखी।

उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए ऐसे क्रान्तिकारियों को तैयार किया, जिन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगाकर अंग्रेजों को भाग जाने के लिए मजबूर किया। भले ही वे अपनी आँखों से भारत मां को स्वतन्त्र नहीं देख सके, क्योंकि इस महान् क्रान्तिकारी और नररत्न का ३१ मई, १९३० को निधन हो गया। अन्तिम समय में इनकी सहधर्मिणी भानुमति जी इनके पास थी, जिन्होंने प्रत्येक कठिनाई में इनका साथ दिया था। इनके कोई सन्तान नहीं थी।

भले ही श्याम जी कृष्ण वर्मा सशरीर आज हमारे बीच नहीं हैं, मगर उनकी यशोगाथा आनेवाली पीढियों के हृदयों में देशप्रेम की ज्वाला को सदा सर्वदा प्रज्वलित रखेगी। क्रान्तिकारियों के आदि प्रणेता इस महामानव को शतशः नमन...!

* * *

श्रीमती पार्वतीबेन वेलानी का देहावसान

आर्य समाज वारजे पुणे की ज्येष्ठ कार्यकर्त्री श्रीमती पार्वतीबेनजी कल्याणजी वेलानी का दि.२३ सितम्बर २०२३ को पुणे में हृदयाघात से दुःखद निधन हो गया। वे ७३ वर्ष की थी। वे अपने पश्चात् एक पुत्र, तीन पुत्रियां, दामाद, पुत्रवधू, तथा पौत्र-पौत्रियों से भरा परिवार छोडकर संसार से विदा हो गयी। श्रीमती पार्वतीबेन आर्य प्र.सभा गुजरात तथा आर्यवन रोजड ट्रस्ट के दिवंगत प्रधान श्री कल्याणजी वेलानी की धर्मपत्नी थी। वैदिक विचारधारा पर उनकी पूरी निष्ठा थी। आर्य समाज वारजे-पुणे की सक्रिय सदस्या होने के साथ ही आतिथ्यसेवा, परिवार का निर्माण, पुण्यदान आदि कार्यों में वे सदैव आगे रहती थी। उनके पार्थिव शरीर पर पुणे के वैकुण्ठ धाम में वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये।

प्रचेता वर्मा नहीं रहे।

अहमदनगर के आर्य कार्यकर्त्ता एवं स्थानीय स्वामी विरजानन्द दण्डी कन्या गुरुकुल के संस्थापक संचालक श्री प्रचेता रामचन्द्रजी वर्मा का दि.७ अक्टूबर २०२३ को एक वाहन दुर्घटना में आकस्मिक दुःखद निधन हुआ। उनकी आयु ६५ वर्ष की थी।

उनके पश्चात् परिवार में पत्नी, तीन कन्याएं व एक पुत्र विद्यमान हैं। श्री वर्माजी ने अपनी कन्याओं का गुरुकुल भेजकर वेद व संस्कृत की विदुषी बनाया। इन्हीं कन्याओं के निर्देशन में गत ३ वर्ष पूर्व कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ किया। यह गुरुकुल नगर-पुणे मार्ग पर कामरगांव के निकट पिंपलगांव कौडा इस स्थान पर चल रहा है। श्री प्रचेताजी के अकस्मात चले जाने से नगर व पुणे परिसर की तथा कन्या गुरुकुल की काफी क्षति हुई है।

श्री प्रचेता जी के पार्थिवपर शोकपूर्ण वातावरण में वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये।

उपरोक्त दोनों दिवंगत आत्माओं की शान्ति व सद्गति हेतु ईश्वर से प्रार्थना!
महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा एवं सभी आर्य समाजों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलियां..!

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

ज्ञानी व अज्ञानी लोक !

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्।
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते।।

(कठोपनिषद्-४/२)

अर्थ – जे लोक बाह्य विषयांची इच्छा करीत त्यांच्या पाठीमागे धावतात, ते अज्ञानी पुरुष आहेत. असे ते मोठ्या प्रमाणातील प्राण्यांमध्ये पसरलेल्या मृत्यु(दुःख) रुपी जन्म-मरणाच्या बंधनामध्ये अडकतात. पण जे विवेकशील ज्ञानी पुरुष आहेत, ते नेहमी दुःखरहित मोक्ष सुखाला ओळखून या जगाच्या अनित्य पदार्थांच्या नश्वर सुखाची कधीही इच्छा धरत नाहीत.

* दयानंद वाणी *

श्रीकृष्ण एक थोर महापुरुष!

श्रीकृष्णाचा जो इतिहास महाभारतात दिलेला आहे, तो अत्यंत उत्तम आहे. त्यांचे गुण, कर्म, स्वभाव व चारित्र्य हे महापुरुषाला शोभावेत असे आहेत. त्यांमध्ये श्रीकृष्णाने जन्मापासून मरणापर्यंत कसलेही अधर्माचरण केले नाही, अथवा कोणतेही दुष्कृत्य त्याच्या हातून घडले नाही, असे लिहिले आहे. परंतु या भागवतकाराने वाटेल ते अनुचित दोष कृष्णाच्या माथी मारले आहेत. दूध, दही, लोणी इत्यादींची चोरी, कुब्जादासीशी समागम, परस्त्रियांशी रासक्रीडा इत्यादी खोटेच दोष श्रीकृष्णावर लादले आहेत. ते सारे वाचून व इतरांना वाचून दाखवून, स्वतः ऐकून व इतरांना ऐकवून इतर पंथांच्या लोकांनी श्रीकृष्णाची बदनामी चालविली आहे. हे भागवत नसते, तर श्रीकृष्णांसारख्या महात्म्याची खोटी निंदा मुळीच झाली नसती. (सत्यार्थ प्रकाश-११ वा समुल्लास)

- एक चिन्तनात्मक लेख -

पितर श्राद्ध (महा-लय)

- पं.राजवीरजी शास्त्री(पुरोहित)

एकदा वृद्ध आई-वडील आपल्या शहरी राहणाऱ्या मुलाकडे चार दिवस राहण्यासाठी गावातून निघाले. जाताना त्यांनी त्यांच्याकडे अनेक वर्षांपासून असलेला विश्वासू सेवक होता. त्याचेकडे घराची चावी दिली. सोबत एक लहान पत्र्याची पेटी ही दिली. म्हणाले घराची देखरेख तर करच पण या पेटीची ही विशेष काळजी घे. आणि ते मुलाकडे निघून गेले. सेवक हा मालकाचा आज्ञाधारकच होता. ती पेटी तो आपल्या मांडीवरच घेऊन बसला. झोपतांना उशाला घ्यायचा. बाहेर जायचे झाले की पेटीसुद्धा सोबतच घेऊन जायचा. असे करीत असतांना पेटीची हालचाल होताना खूप आवाज होत होता. हे नोकराला खटकू लागले, तेंव्हा त्याने ती पेटी उघडली. त्यात कांही वस्तू होत्या. त्यांचा आवाज होत होता, त्या वस्तू बाहेर फेकून दिल्या आणि पूर्ववत ती पेटी सांभाळू लागला. तर मग आता सांगा, त्याचे मालक व मालकीन जेंव्हा घरी परत येतील आणि हा सर्व प्रकार पाहतील, तेंव्हा त्या विश्वासू व इमानदार सेवकाला प्रसन्नतेने शाबासकी देतील? की त्याला अशा वागण्यावर मुर्खात काढतील?

बंधुनों! आत्मपरिक्षण करा. आपण त्या सेवकापेक्षा वेगळे आहोत का? ते शोधा. आपणही आपले पूर्वज, आपला धर्म, आपली संस्कृती, आपले सण-उत्सव, व्रत, चालीरिती परंपरा यांचे तंतोतंत जतन करीत आहोत. पण हे करतांना त्या प्रामाणिक, पण वेड्या सेवकाचे अनुकरण तर करीत नाही ना? यावर विचार करा.

पूर्वजांनी घालून दिलेल्या रुढी-परंपरा, सण-वार, उत्सव वगैरे विषयींचा आदर आपण केला पाहिजे. त्यांची श्रद्धा व निष्ठापूर्वक जपणूक ही केलीच पाहिजे. याबाबत दुमत नाही.

आपल्या पूर्वजांनी, ऋषी-मुनींनी साधु-संतांनी ज्याचे रक्षण-पालन पोषण करायला सांगितले आहे ते का व कशासाठी त्यांचा उद्देश्य काय? जे करायला सांगितले ते साध्य आहे की साधन आहे ? याचा विचार करण्याची आज गरज आहे. याचा सारासार विचार न करता सण साजरे करणे म्हणजे रिकामी पेटी सांभाळण्यासारखे आहे.

मानवमात्राला जीवनाची सार्थकता कशात आहे? हे सांगण्यासाठी तो हसत-खेळत सहजपणे अभ्युदय म्हणजे इहलोकी सुखी समाधानी व्हावा आणि निःश्रेयस अर्थात परलोक सिद्ध करण्यासाठी, म्हणजेच मोक्ष मिळविण्यासाठी समर्थ व सक्षम व्हावा यासाठी या धर्म-संस्कृती, उत्तम परंपरा, सण-वार-उत्सवरुपी उपयोगी साधनांना त्याने आपल्या हाती सोपविले आहे. पण आपण त्यांचा अभ्युदय व निःश्रेयस प्राप्तीच्या दृष्टीने उपयोग न करता त्या साधनांनाच साध्य मानून त्यांना चिकटून बसलो आहोत. हा विशुद्ध आंधळेपणा आहे. साधनांची काळजी घेणे, त्यांना सुव्यवस्थित ठेवणे ही चांगलीच गोष्ट आहे. पण जी साधने ज्या कामासाठी आहेत, त्या कामासाठी त्यांचा सदुपयोग करणे हे अधिक महत्त्वाचे आहे.

आता 'श्राद्ध' पक्ष साजरा करण्याची परंपरा आपण जपतो. मान्यता अशी आहे की भाद्रपद महिन्याच्या कृष्ण पक्षात पितर पृथ्वीवर येतात. त्यांच्या नावाने ब्राह्मणांना अन्न, वस्त्र, दान-दक्षिणा वगैरे देऊन श्राद्धतर्पण किंवा पिंडदान केल्याने त्यांच्या आत्म्याला शांती मिळते. ते प्रसन्न होऊन आशीर्वाद देतात. त्यामुळे परिवारामध्ये सुख-समृद्धी नांदते. यश-कीर्ती प्राप्त होते. पण जर काय त्यांचे श्राद्ध नाही केले, तर जन्म कुंडलीत पितृदोष येतो. घरात सुख शांती नांदत नाही. कुठल्याही कामाला यश येत नाही. मुलां-मुलींचे विवाह जुळत नाहीत. मुले दुराचारी, दुर्गुणी बनतात. म्हणून आपण श्राद्ध-तर्पण विधी केला जातो.

हे खरे आहे की पितरांच्या श्राद्ध तर्पणाने ते 'पितर' तृप्त होतात. त्यांनी 'तुझे कल्याण होवो' असे म्हटले की कल्याणच होते. शास्त्र सांगते की, थोरांची सेवा व अभिवादनाने दीर्घायुष्य, विद्या, यश व बल या चार बाबी प्राप्त होतात. घरातल्या कटकटी नाहीशा होतात. मुले सदाचारी सुस्वभावी बनतात, घरात स्वर्ग-सुख नांदते. आपण अनेक वर्षांपासून वार्षिक पितर श्राद्ध घालतो. पण शास्त्रात जे फळ सांगितले आहे, ते फळ पदरी पडताना दिसत नाही. कारण आपण ज्यांना 'पितर' म्हणतो, ते आपल्या पिंडदानाने तृप्त झाले की नाही? त्यांनीआशीर्वाद दिला की नाही? हे काहीच कळायला मार्ग नाही आणि तो कळणार ही नाही. कारण पितराच्या आत्म्याला शांती मिळावी, ते प्रसन्न व्हावेत, त्यांचा आशीर्वाद मिळावा म्हणून जो

श्राद्धतर्पणाचा विधी केला. तोच मुळात खोटा आहे. कारण शास्त्रामध्ये दिवंगतांना मृत पावलेल्यांना पितर म्हटले नाही, फार तर आपण त्यांना 'पूर्वज' म्हणू शकतो. त्यांच्यासाठी त्यांनी केलेल्या उपकाराची जाणीव ठेवलीत, तरीही पुरेसे आहे. त्यांना तुमच्या पिंडदानाची व श्राद्ध-तर्पणाची मुळीच गरज नाही. तर मृतांपेक्षा जीवंत असणाऱ्यांनाच अन्न, वस्त्र, निवारा, सेवा-सुश्रूषा, आदर, मान-सन्मानाची गरज असते.

जीवंत व्यक्तीच श्राद्ध-तर्पणाचा स्वीकार करु शकते. तीच प्रसन्न होऊन आशीर्वाद देऊ शकते. म्हटलेच आहे ना- 'जीवित बाप से दंगमदंगा, मरे हुए को पहुचाये गंगा!' अशा वर्तनाने कुंडलीतील पितर दोष नाहीसा होत नाही उलट तो अधिक मजबूत होऊन बसतो. जीवंत आई-वडील, सासू-सासरे, आजी-आजोबा व पणजी-पणजोबा यांना शास्त्राने पितर म्हटले आहे. जीवित आई-वडील, आजी-आजोबा व पणजी-पणजोबा अशा तीन पिढ्या एकाच परिवारात एकत्रितपणे पाहण्याचा योग फार थोड्या जणांना नशीबी येत असतो. प्राचीन काळी लोक शंभर ते दीडशे-दोनशे वर्षांपर्यंत जगायचे. तेंव्हा तीन पिढ्यांची सेवा सुश्रूषा करणे सहज शक्य होते. या तिन्ही पिढ्यांची सेवा सुश्रूषा मनोभावे करणे, त्यांची आज्ञा पाळणे, त्यांना सुयोग्य वागणूक देणे, आदर मान-सन्मान देणे. याशिवाय स्वतःही विद्वान, धर्मात्मा, सदाचारी, सुस्वभावी व सुकर्मी बनून राहणे, या व्यवहारांचेच नाव 'श्राद्ध' आणि 'तर्पण' आहे. इतरांना प्रसन्न करण्याची हीच खरी विधी आहे आणि असे 'श्राद्ध' रोज नित्य करावे लागते, याला शास्त्रीय भाषेत 'पितृ-यज्ञ' म्हणतात. हेच खरे 'पितृश्राद्ध' आहे. अशा पितृश्राद्ध व तर्पणातच खरी तृप्ती आहे, यात शांती व समाधान आहे.

जीवंत पितरांची हेळसांड करणे, त्यांची उपेक्षा करणे, त्यांना शिवीगाळ करणे किंवा त्रास देणे सोडायचे नाही आणि जे जिवंत नाहीत, त्या मृत पितरांच्या आत्म्याला शांती मिळावी, म्हणून कोणाचे तरी पोट भरण्यात काहीच अर्थ नाही. पितृयज्ञ किंवा पितर श्राद्ध हे नेहमीच करायचे असते. मग भाद्रपद महिन्यातील कृष्ण पक्षाला पितृपक्ष किंवा श्राद्धपक्ष का म्हणतात?

याचा संबंध चातुर्मासाशी येतो. प्राचीन काळी ऋषि-मुनी, साधु-संत, तपस्वी, वानप्रस्थी, संन्यासी व आचार्य

लोक पावसाळ्यात वनातून गावात आश्रयास येत. मग गावकरी सार्वजनिक स्थळी सत्संग-भजन-प्रवचनाचे आयोजन करीत. ज्ञानसाधना करीत. भाद्रपद महिन्यातील कृष्णपक्ष म्हणजे वर्षा ऋतूच्या परतीचा काळ. त्यामुळे पाऊस काळात आश्रयास आलेले गणपती अर्थात ऋषीमुनी, साधुसंत, वानप्रस्थी, संन्यासी अथवा गुरुजन पावसाळा संपला म्हणून आपापल्या आश्रमाकडे परत जाण्याच्या तयारीला लागतात.

ज्यांनी काही काळ आपल्या गावी राहून आपल्याला ज्ञान दिले, अध्यात्माचे धडे दिले, जीवन जगण्याची कला शिकवली, कल्याणाचा मार्ग सांगितला, त्या पितरांना म्हणजेच देश-धर्म-संस्कृतीचे रक्षण करणाऱ्यांना दान-दक्षिणा देणे ही वैदिक परंपरा आहे. गावातील सगळेजण एकाच दिवशी त्यांचे आदरातिथ्य करायचे ठरवले, तर ती ज्ञानवृद्ध व्यक्ती सर्वांच्या घरचे अन्न ग्रहण करेल? म्हणून ज्यांचे अजुन आदरातिथ्य करावयाचे राहिले आहे, त्या परिवाराने या पंधरवाड्यात सर्वांच्या सोयीनुसार एकेक दिवस निश्चित करावा आणि त्यांना घरी बोलावून, त्यांना अन्न-वस्त्र-दान-दक्षिणा देऊन त्यांना वंदन करावे, त्यांना आपल्या उत्तम व्यवहारातून प्रसन्न करावे, त्यांचा आशीर्वाद घ्यावा आणि मग त्यांना निरोप द्यावा. पुढच्या वर्षी 'पुन्हा आमचे गावी अवश्य' या म्हणून आर्जव करावा ही व्यवस्था होती.

परंतु आता काळ बराच बदलला आहे. आता कोणी रानावनात आश्रम बांधून राहत नाही. कुणी वानप्रस्थी, संन्यासी, आचार्य, योगी, तपस्वी वनात राहत असले, तरी राहण्याची उत्तम सोय असते. रस्ते व वाहनांची सोय असते, त्यामुळे त्यांना कुठे आपला आश्रम सोडून बाहेरगावी कोणाच्या आश्रयाला जायची गरज राहिलेली नाही. यासाठीच तर सध्या चातुर्मासात मठ मंदिरात श्रेष्ठ ग्रंथांचे वाचन, पारायण, कथा, कीर्तन, प्रवचन किंवा सप्ताहाचे आयोजन केले जातात. हवे त्याला कीर्तन व प्रबोधनकाराला आमंत्रित करतात. कार्यक्रमापुरते त्यांची भोजन व निवासाची व्यवस्था केली जाते. कार्यक्रम संपला की दान दक्षिणा संतोष जनक देऊन पाठवणी करतात. हे पितरश्राद्धच आहे. हे पंधरवाड्यात व्यावहारिक स्वरुप आहे. बाकी आपण जे करतो, ते अवैज्ञानिक, अशास्त्रीय आणि निव्वळ अंधश्रद्धाच आहे.

- आर्य समाज, सोलापुर

मो.९८२२९९००११

श्रावणात निनादले वैदिक ज्ञानाचे सूर

समग्र मानव समाजाला सुखी, आनंदी व सत्यज्ञानी बनवण्याच्या उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे गेल्या महिनाभरात (१७ ऑगस्ट ते १६ सप्टेंबर २०२३) आयोजित श्रावणी वेदप्रचार अंतर्गत 'मानवजीवन वेदज्ञान प्रचार कार्यक्रमां'ना जोरदार प्रतिसाद मिळला. राज्यातील जवळपास १२० ठिकाणच्या आर्य समाजांमध्ये यज्ञ ,भजन व प्रवचनांमुळे वातावरण अध्यात्ममय ,धार्मिक व भक्तिमय बनले. या कार्यक्रमांना ऐकण्यासाठी श्रोत्यांची गर्दी व्हायची, तर दररोज सकाळी यज्ञाचा सुगंध दरवळायचा! त्या-त्या ठिकाणचे आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्त्यांनी आपापल्या द्विदिवसीय, त्रिदिवसीय, अथवा साप्ताहिक श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रमांना यशस्वी करण्यासाठी यथाशक्ती प्रयत्न केला.

उत्तर भारतातून आमंत्रित करण्यात आलेल्या दहा विद्वान व भजनीकांच्या माध्यमाने, तर राज्यातील ५० मराठी भाषिक प्रचारकांच्या माध्यमाने श्रोत्यांना वेदज्ञानाची जणू काही पर्वणीच लाभली. आर्य समाजातील कार्यक्रमाबरोबरच पारिवारिक सत्संगाचेही आयोजन झाले .तर विविध ठिकाणच्या शाळा महाविद्यालयामध्ये विद्यार्थ्यांसाठी प्रबोधनात्मक कार्यक्रम सुद्धा पार पडले. या सर्व कार्यक्रमांचा संक्षिप्त वृत्तांत देण्यात येत आहे.

अ) पं.शिवकुमारजी शास्त्री व पं.प्रदीपजी आर्य यांचे कार्यक्रम

पुणे, नाशिक व धुळे भागातील आर्य समाजामध्ये यावर्षी पं.शिवकुमारजी शास्त्री (वैदिक विद्वान, सहारनपुर) व पं.प्रदीपजी आर्य(भजनीक, फरिदाबाद) यांनी वेदप्रचाराचे कार्य केले.

वारजे-पुणे येथे नवा उत्साह -

पुणे शहरातील आर्य समाज वारजे येथे श्रावणी कार्यक्रमाला चांगल्या प्रकारे सुरुवात झाली. सकाळी आर्य समाजात संपन्न झालेल्या भजन व प्रवचन कार्यक्रमास कार्यकर्त्यांसह महिला व कुटुंबातील मुलां- मुलींची संख्या अधिक होती. पं. शिवकुमारजींनी संपूर्ण सृष्टीचा निर्मात्या भगवंताचे आपल्यावर अनंत उपकार असल्याचे सांगून अंधश्रद्धा व नानाविध रूढी परंपरांपासून दूर राहून माणसाने वेदांचे विशुद्ध ज्ञान अंगी करावेत

,असे आवाहन केले. यावेळी भजनीक पं. प्रदीप आर्य यांनी मधुर भजने सादर करून श्रोत्यांना मंत्रमुग्ध केले. त्यानंतर विविध परिवारात देखील यज्ञ,भजन व प्रवचनांचे कार्यक्रम संपन्न झाले. सभेचे उपप्रधान श्री लखमसी वेलानी व इतर कार्यकर्त्यांनी कार्यक्रमाचे नियोजन केले होते.

पिंपरीत श्रोते प्रभावित –

पिंपरी येथील आर्य समाजात दररोज सकाळी ७ ते ९.३० वा. व सायं. ६ ते ८.१५ दरम्यान वेदप्रचाराचे कार्यक्रम पार पडले. पं.विवेकजी आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या वेदपारायण यज्ञात सर्वश्री राम अवधसिंहजी, दत्ता सूर्यवंशी, कमलेश धर्मानी, प्रमोद आर्य आदी यजमान सपत्नीक सहभागी झाले. आचार्य पं.शिवकुमारजींनी आपल्या अभ्यासपूर्ण वाणीतून विविध विषयांवर अतिशय प्रभावीपणे विचार मांडले, तर पं.प्रदीपजींची भजने ऐकून सर्व श्रोते मंत्रमुग्ध झाले. दोन्ही वेळच्या कार्यक्रमांना ऐकण्यासाठी दीडशे ते दोनशे श्रोते उपस्थित राहत असत. एकूणच या वर्षीचा श्रावणी कार्यक्रम अतिशय प्रभावशाली ठरला.

या कार्यक्रमाला जोडूनच सर्वश्री उत्तमराव दंडिमे, दत्ता सूर्यवंशी, कमलेशजी वेलानी यांच्या परिवारात वैदिक सत्संग कार्यक्रमाचेही आयोजन करण्यात आले. पिंपरीचा हा श्रावणी महोत्सव सफल करण्यासाठी संरक्षक श्री मुरलीधरजी सुन्दरानी, प्रधान सुरेन्द्रकुमारजी करमचंदानी, मंत्री श्री हरेशजी त्रिलोकचन्दानी, कोषाध्यक्ष श्री जयरामजी धर्मदासानी व इतर कार्यकर्त्यांनी प्रयत्न केले.

नाना पेठेत ‘सामवेद शतक यज्ञ’–

पुण्यातील नाना पेठ या जुन्या आर्य समाजात त्रिदिवसीय श्रावणी कार्यक्रम झाला. यात सकाळी आर्य समाजात, तर सायंकाळी विविध कुटुंबात यज्ञ, भजन, प्रवचन पार पडले. आर्य समाजात दोन दिवस सामवेद शतकं यज्ञ,तर विजय याग पार पडला. यज्ञाचे पोरोहित्य पं. श्री ऋषिपाल पांडे यांनी केले. शेवटच्या दिवशी यज्ञोपवीत संस्कार घेण्यात आला. पं.शिवकुमार जी शास्त्री यांनी आर्य श्रोत्यांना आध्यात्मिक, धार्मिक व राष्ट्रीय विषयांवर मार्गदर्शन केले. तर पं. प्रदीप आर्य यांनी आपल्या भजनांच्या माध्यमाने वातावरण अतिशय उत्साहमय बनविले. श्रीमती संतोष गुप्ता व श्री संदीप सुरेंद्र आनंद यांच्या

घरी यज्ञ पार पडले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रतिभा आर्य, नीता आर्य, सरोज कर्मचंदानी, हर्ष आर्य ,राधा यादव आदींनी प्रयत्न केले. या सर्व कार्यक्रमाचे सुव्यवस्थित नियोजन श्रीमती सुदर्शन मनचंदानी यांनी केले.

नाशिकात दोन्ही आर्य समाजात श्रावणी

पुण्यानंतर पं.शिवकुमारजी व पं.प्रदीपजी यांचे नाशिक शहरातील देवळाली कॅम्प व पंचवटी या दोन्ही आर्य समाजात ३-३ दिवसांचे श्रावणी कार्यक्रम पार पडले. सकाळी व रात्री विद्वानांनी विविध वैदिक विषयांवर मार्गदर्शन केले. तर काही पारिवारिक सत्संग देखील संपन्न झाले. देवळालीत प्रधान श्री संतोष आर्य व मंत्री श्री नरेंद्रजी शास्त्री यांनी परिश्रम घेतले. पंचवटीत आर्य समाजात सकाळी व सायंकाळी कार्यक्रम झाले. श्री वैजनाथ काळे व अग्रवाल कुटुंबात पारिवारिक सत्संग पार पडला. कार्यक्रम सफल करण्यासाठी प्रधान प्रा.डॉ.प्रकाश कदम, मंत्री संतोष अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुरेशजी वर्मा, उपप्रधान रोचना भारती, वैजनाथ काळे आदींनी प्रयत्न केले.

भगूर येथील कार्यक्रम प्रभावशाली

वीर सावरकरांची जन्मभूमी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या भगूर (नाशिक) येथील आर्य समाजात द्विदिवसीय श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम संपन्न झाला. येथे दोन्ही पंडितांनी आपल्या प्रभावशाली वक्तव्यातून मानवी जीवनात वेदज्ञानाचे महत्त्व, आध्यात्मिक विचार व आर्य समाजाची आवश्यकता इत्यादी विषयावर मार्गदर्शन केले.

श्रीमती सुशीला बाबुराव बलकवडे यांच्या ८६ व्या वाढदिवसांनिमित्त त्यांचा गौरव करण्यात आला. श्रावणी यज्ञात श्री प्रकाश व सौ. सविता मांडे, श्री कार्तिक व सौ. हर्षदा बलकवडे, सौ. विद्या व राजेंद्र बलकवडे, तसेच विजया बलकवडे,प्रतीक व इतर सहभागी झाले होते. गावातील नूतन विद्यामंदिर व करंदीकर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयातही या विद्वानांची व्याख्याने पार पडली. यावेळी विद्वानांनी विद्यार्थ्यांच्या जीवनात सच्चारित्र्य, राष्ट्रप्रेम माणुसकी व कठोर परिश्रम इ. मूल्य रुजावेत, यासाठी प्रयत्न करण्याचे आवाहन केले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रधान श्री जयकिशोर जी कलंत्री, मंत्री कार्तिक बलकवडे, कोषाध्यक्ष नंदू सूर्यवंशी प्रयत्न केले.

धुळ्यात कार्यक्रमांना प्रतिसाद व सांगता

मालेगांव येथे कार्यक्रम होऊ

शकला नाही. त्यानंतर धुळे येथील आर्य समाजात आठवडाभर वेदप्रचार कार्यक्रम झाला. यात १६ यजमान सपत्नीक सहभागी झाले होते. विशेष करून महिलांनी अधिक उत्साह दाखविला. सकाळी ८ ते १० व सायं.५ ते ७ या दरम्यान आर्य समाजात पार पडलेल्या कार्यक्रमांना श्रोते बहुसंख्येने उपस्थित होते. त्याबरोबरच शहरातील स्वामी टेऊराम हायस्कूल, नूतन विद्यालय, जे.आर.सी.डी. हायस्कूल या शाळांमध्ये तर रा.स्व.संघ कार्यालयात वरील विद्वानांच्या व्याख्यानाचा कार्यक्रम झाला. कार्यक्रमासाठी महाराष्ट्र सभेचे प्रधान श्री योगमुनिजी, आर्य समाजाचे प्रधान जयगोपालजी दादलानी, मंत्री गिरीष अरोरा, कोषाध्यक्ष रेखा रेलन आदींनी परिश्रम घेतले. अंतिम दिनी दोन्ही विद्वानांना भावपूर्ण निरोप देण्यात आला.

ब)पं.यशवीरजी शास्त्री व पं.नेत्रपालजी आर्य यांचे कार्यक्रम

या दोन्ही विद्वानांचे कार्यक्रम पूर्णा येथून सुरु झाले. महिनाभरात त्यांनी नांदेड, हिंगोली व परभणी जिल्ह्यातील विविध आर्य समाजामध्ये वैदिक धर्माचा प्रचार केला.

पूर्णा येथे महाविद्यालयात व्याख्यान-

पूर्णा येथे यावर्षी प्रथमच उत्तर भारतातील विद्वानांना पाठवण्यात आले होते. तेथे श्री मोहित त्रिवेदी यांच्या प्रयत्नातून सकाळी अंबिका मंदिरात विशेष यज्ञ, भजन व प्रवचन पार पडले. त्यानंतर शहरातील गुरुबुद्धी महाविद्यालयात प्रबोधन पर कार्यक्रम पार पडला. यात प्रारंभी पं. नेत्रपाल आर्य यांनी देशभक्तीपर गीते सादर केली व नंतर आचार्य पंडित यशवीरजी शास्त्री यांनी विद्यार्थ्यांना बहुमोल असे मार्गदर्शन केले. या कार्यक्रमास परभणी, नांदेड व परळी येथील कार्यकर्ते उपस्थित होते. श्री मोहित त्रिवेदी यांनी पहिल्यांदाच विद्वानांच्या निवास-भोजनाची व्यवस्था करून कार्यक्रमाचे नियोजन केले.

हिंगोलीत कार्यक्रम उत्साहात –

हिंगोली येथील आर्य समाजाच्या श्रावणी पर्वाची सुरुवात उत्साहात झाली. यात यज्ञाच्या प्रसंगी विद्वान श्री यशवीरजी यांनी अध्यात्माचा आधार घेतल्याविना मानवी जीवनात सुख शांती निर्माण होऊ शकत नाही, असे सांगितले. याच कार्यक्रमात जोडून सामूहिक उपनयन संस्कार हा कार्यक्रम घेण्यात आला. तर दोन्ही विद्वानांचे दयानंद एज्यूकेशन सोसायटीच्या दोन शाळांमध्ये मार्गदर्शनपर कार्यक्रम पार पडले. यावेळी प्रधान श्री संतोष लदनिया व इतर

पदाधिकाऱ्यांनी यशस्वीपणे प्रयत्न केले.

नांदेड येथे द्विदिवसीय कार्यक्रम –

नांदेडच्या आर्य समाजात श्रावणी वेदप्रचार दोन दिवस साजरा करण्यात आला. यात आचार्य यशवीरजींच्या ब्रह्मत्वाखाली संपन्न झालेल्या यज्ञात विविध यजमान सहभागी झाले. यज्ञानंतर भजन व नंतर प्रवचनाचे कार्यक्रम पार पडले. पं.यशवीरजींचे विचार ऐकण्यासाठी श्रोते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित राहिले. समाजाच्या प्रधान श्रीमती गंगाबाई मारमपल्ले, ॲड.कदम, नारायणराव कुलकर्णी, यादवराव भांगे आदींनी कार्यक्रमासाठी प्रयत्न केले.

निवघा येथे चांगला प्रतिसाद –

ग्रामीण भागातील क्रियाशील आर्य समाज म्हणून ओळखल्या निवघा (बाजार) या आर्य समाजात सकाळी यज्ञ,भजन व प्रवचन तर संध्याकाळी देखील भजन व व्याख्यानाचे कार्यक्रम पार पडत असत. श्री पंडित यशवीरजी शास्त्री यांनी आपल्या प्रभावपूर्ण भाषणातून त्यांनी वैदिक ज्ञानानेच विश्वातील वाढत चाललेल्या समस्या नाहीशा होऊ शकतात, असे सांगितले.

भजनोपदेशक पंडित श्री नेत्रपालजी शास्त्री यांनी आपल्या मधुर गायनाने श्रोत्यांना आकर्षित केले. त्यांच्या भजनातून उपस्थित त्यांना ज्ञानात्मक मनोरंजनाची जणू काही मेजवानीच मिळाली. गावातील एका शाळेत आयोजित एका कार्यक्रमात श्री नेत्रपालजींनी ज्ञानप्रद भजने गाऊन मुलांमध्ये सुसंस्कार, मानवी मूल्य, देशभक्ती आदींचे बीजारोपण केले. कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी प्रधान श्री कदम, मंत्री श्री धोंडिरामजी शिंदे, दीपक शिंदे व इतरांनी परिश्रम घेतले.

हदगावचा श्रावणी कार्यक्रम –

हदगाव येथील श्रावणी कार्यक्रम यशस्वीपणे पार पडला. दररोज विविध यजमानांच्या उपस्थितीत श्रावणी वेदयज्ञ संपन्न होत असे. त्यानंतर पं.श्री यशवीरजींचे व्याख्यान व पं.श्री नेत्रपालसिंहजींचे भजन पार पडत असे. यासोबत चंद्रकांत वेदालंकार यांनीही मार्गदर्शन केले. यज्ञ व इतर कार्याची व्यवस्था पं.सोगाजी घुन्नर यांनी केली. आर्य समाजाच्या कार्यक्रमासोबत स्थानीय शाळांमध्ये ही विद्वानांचा प्रबोधनपर कार्यक्रम घेण्यात आला. कार्यक्रम सफल करण्यासाठी प्रधान श्री शेषरावजी शिंदे सर, मंत्री श्री प्रभाकरराव देशमुख व इतरांनी प्रयत्न केले.

मुदखेड येथे द्विदिवसीय कार्यक्रम

मुदखेड येथील श्रावणी निमित्त पारिवारिक सत्संग व शालेय विद्यार्थ्यांसाठी मार्गदर्शनपर व्याख्यान कार्यक्रम घेण्यात आले.मुदखेड येथे आर्य समाजाची जागा आहे, पण तिथे भवन नसल्याने आर्य कार्यकर्त्यांना पारिवारिक कार्यक्रम घ्यावे लागतात. श्री बोड्डावार व श्री उन्हाळे हे यासाठी प्रयत्नशील असतात. पं.यशवीरजी व पं.नेत्रपालजी यांनी येथे श्रावणी वेदप्रचारादरम्यान उपस्थितांना वैदिक विचारांवर सारगर्भ असे मार्गदर्शन केले, तर एक माध्यमिक शाळेत व्याख्यानही दिले.

देगलूरात श्रावणी सफल ठरली-

देगलूर येथील आर्य समाजाचा श्रावणी उत्सव अतिशय उत्साहाने साजरा झाला. दररोज सकाळी व संध्याकाळी आर्य समाजात कार्यक्रम पार पडले. प्रतिदिनी नवनव्या यजमानांनी श्रद्धेने आहुत्या प्रदान केल्या. यासोबतच शहरातील गोलवळकर गुरुजी विद्यालय, लिंगनकेसर येथील जनजागृती विद्यालय व खाजगी शिकवणी वर्गात पं.यशवीरजी व पं.नेत्रपालजींचे कार्यक्रम घेण्यात आले. शेवटच्या दिवशी पारिवारिक सत्संग झाला. हे कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी प्रधान डॉ.हनमानलु, मंत्री श्री विजय उनग्रतवार, कोषाध्यक्ष प्रा.अभय कळसकर, श्री महेंद्रकर, श्रीमती पलकोंडवार आदींनी प्रयत्न केले.

परभणीत कार्यक्रमाची सांगता -

पं.यशवीरजी शास्त्री व पं.नेत्रपालजी आर्य यांच्या महिनाभराच्या श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमांची सांगता परभणीत झाली. ५ दिवस चाललेल्या या कार्यक्रमात सकाळ-संध्याकाळ विद्वानांनी विविध विषय अभ्यासपूर्वक मांडले. मंत्री श्री डॉ.धनंजय औंढेकर यांच्या निवासस्थानी हे सर्व कार्यक्रम पार पडले. त्याचबरोबर स्थानिक ज्ञानगंगा गुरुकुल विद्यालयात कार्यक्रम संपन्न होत झाले. कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी संरक्षक श्री विजयकुमारजी अग्रवाल, प्रधान श्री बालकिशन जी बिर्ला, मंत्री डॉ. धनंजय औंढेकर, उपप्रधान बाबुराव आर्य, महिलाप्रमुख सौ.लीलावती जगदाळे, श्री गावंडे, दयानंद आर्य, रोहित जगदाळे, दिगंबर देवकते आदींनी प्रयत्न केले.

दि.१७ सप्टेंबर रोजी सकाळी दोन्ही विद्वान व ढोलक वादक यांना परभणीच्या सर्व आर्यकर्त्यांनी भावपूर्ण निरोप दिला.

(उर्वरित श्रावणी वृत्तांत पुढील अंकात)

वार्ता विशेष

आधुनिक विज्ञानाचे मूळ वेद आहेत !

लोकसभेत डॉ. सत्यपाल सिंह यांचे प्रतिपादन

'भारतीय वैदिक संस्कृती ही अतिशय प्राचीन असून आधुनिक विज्ञानाचे मूळ वेदज्ञानात दडले आहे', असे प्रतिपादन माजी केंद्रीय राज्यमंत्री खासदार डॉ.सत्यपाल सिंह यांनी केले. लोकसभेच्या पावसाळी अधिवेशनात श्री सिंह हे बोलत होते. डॉ. सत्यपाल सिंह यांनी प्रारंभी भारताच्या यशस्वी चांद्रयान-३ मोहिमेबद्दल इस्रोच्या वैज्ञानिकांचे व पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी यांचे अभिनंदन केले. यावेळी त्यांनी 'स्वस्तिपंथामनुचरेम सूर्याचंद्रमसाविव!' या मंत्राचा आवर्जुन उल्लेख केला. यावेळी त्यांनी स्वामी दयानंद सरस्वती यांच्या क्रांतिकारी वेद प्रचार कार्याचाही गौरव केला. यावेळी त्यांच्यासमवेत आर्यसंसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती हे देखील विराजमान झाले होते.

कु.गार्गीने केले पंतप्रधान श्री मोदींचे स्वागत..!

गारखेडा, संभाजीनगरचे आर्य कार्यकर्ते श्री लक्ष्मण माने यांची कन्या कु.गार्गी माने हिला पंतप्रधान श्री नरेंद्र मोदी यांच्या स्वागतानिमित्त वाराणसी येथे आयोजित विशेष कार्यक्रमात सहभागी होण्याची संधी मिळाली. कु.गार्गी ही सध्या वाराणसीच्या पाणिनी आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालयात शिकत आहे. पंतप्रधान श्री मोदी यांनी नुकताच आपल्या वाराणसी मतदार संघाचा दौरा केला. संसदेत महिला आरक्षण विधेयक संमत झाल्याच्या पार्श्वभूमीवर श्री मोदी यांचा विशिष्ट क्षेत्रात काम करणाऱ्या महिलांकडून वाराणसीत स्वागत झाले. यामध्ये महिला व मुलींमध्ये पाणिनी कन्या गुरुकुलाची विद्यार्थिनी ब्रह्मचारिणी कु.गार्गी हिलाही स्वागताची संधी मिळाली. या गौरवाबद्दल कु. गार्गी हिचे सर्व आर्यजनांकडून हार्दिक अभिनंदन..!

जालन्यात ॲड.चौहान यांचे व्याख्यान

जालना येथील आर्य समाजाचा श्रावणी उत्सव नुकताच संपन्न झाला. यात वैदिक विद्वान म्हणून सभेतर्फे ॲड.श्री जोगेंद्रसिंह चौहान यांनी १६ संस्कारांचे महत्त्व व पंच महायज्ञ यावर प्रकाश टाकला. यावेळी श्री बद्रीप्रसाद सोनी, मंत्री भैयालाल अहीर, संतोष आर्य, पारसनंद यादव, मनीषनंद हे उपस्थित होते.

शोक वार्ता

पं.योगीराज भारती यांना मातृशोक

परळीचे आर्य कार्यकर्ते पं. श्री योगीराज भारती यांच्या मातु:श्री श्रीमती कृष्णाबाई दत्तात्रय भारती(वय ९८) यांचे दि.०३ सप्टें. २०२३ रोजी स.७.४० वा. वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे तीन मुले, तीन मुली व नातवंडे, पतवंडे असा परिवार आहे. श्रीमती भारती राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षक स्व.श्री दत्तात्रय भारती यांच्या पत्नी होत. त्यांच्या पार्थिवावर त्यांचे मूळ गाव भारज त्या.अंबाजोगाई येथे दुपारी अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

दिगंबरराव सुवर्णकार यांचे निधन

पूर्णा येथील आर्य विचारांचे कर्तव्यदक्ष शिक्षक श्री दिगंबरराव विठ्ठलराव सुवर्णकार (वय ८४) यांचे ८ सप्टेंबर रोजी स.७ वा. दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी आशाबाई, सुपुत्र मिलिंद, तीन मुली व नातवंडे असा परिवार आहे.

दिवंगत श्री सुवर्णकार हे कट्टर आर्य समाजी विचारांचे होते. विविध सामाजिक कार्यात त्यांचा सहभाग होता. मूळचे हाळी ता. उदगीर येथील राहणारे श्री सुवर्णकार हे पूर्णा येथेच स्थायिक झाले. वैदिक धर्माच्या प्रसाराला गती यावी म्हणून अगदी मृत्यूच्या कांही महिन्यापूर्वी त्यांनी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेस १,००,००० /- रुपयांची राशी देऊन आपल्या दानशूर सद्वृत्तीचा परिचय करून दिला आहे.

दिवंगत श्री सुवर्णकार यांच्यावर पं.नयनकुमार आचार्य, श्री रंगनाथ तिवार व श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमाच्या दोन ब्रह्मचाऱ्यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

विजयकुमार बंग यांचे निधन

धाराशिव आर्य समाजाचे मंत्री व सभेचे अंतरंग सदस्य श्री. विजयकुमार सत्यनारायण बंग(वय ५५) यांचे दि.१४ सप्टेंबर २०२३ रोजी अल्पशः आजाराने दु:खद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी, दोन मुली, मुलगा, वडील, भाऊ असा परिवार आहे.

श्री विजयकुमार हे कांही महिन्यापासून हृदयविकाराने आजारी

होते. त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार पार पडले. पं. डॉ. विनोदकुमार वेदार्य यांनी हा अंत्यविधी केला. या प्रसंगी सभेचे मंत्री राजेंद्र दिवे, उपमंत्री शंकरराव बिराजदार, स्थानिक प्रधान प्राचार्य गोविंदराव मैंदरकर, यांच्यासह उपस्थितांनी श्रद्धांजली वाहिली.

श्री सुभाष गायकवाड यांचे देहावसान

सोलापूर येथील आर्य समाजाचे प्रधान व तत्वनिष्ठ वेदधर्मी श्री सुभाषजी भानुदासराव गायकवाड यांचे दि.२२ सप्टेंबर रोजी स.९ वा. हृदयविकाराने आकस्मिक दुःखद निधन झाले. मृत्यू समयी ७३ वर्षे वयाचे होते. गेल्या तीन- चार दिवसापासून ते फुफुसाच्या विकाराने आजारी होते. त्यांच्या मागे पत्नी सुमनबाई, मुलगा प्रशांत, स्नुषा ,दोन मुली शुभांगी ओम जाधव व सुचित्रा सुदेश गडद आणि नातवंडे असा परिवार आहे. लातूरचे प्रसिद्ध उद्योजक श्री ओमप्रकाश जी जाधव (निरमनाळे) यांचे ते सासरे होते

स्व. श्री गायकवाड आर्य समाज सोलापूरचे निष्ठावान व क्रियाशील कार्यकर्ते होते. पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी व पं. राजवीर जी शास्त्री यांच्या सानिध्यामुळे ते आर्यसमाजी बनले. सात्विक, सुस्वभावी, मितभाषी, प्रखर वैदिक धर्मी व सामाजिकतेची भावना अंगी असलेले श्री गायकवाड हे मधुर भजने देखील गात असत. सभेच्या श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात व संस्कार शिबिरांमध्ये तसेच आर्य समाजाच्या सत्संग, सभा, संमेलनात सहभागी होऊन ते उत्साहाने भजने सादर करीत. अशा एका क्रियाशील व सुस्वभावी कार्यकर्त्यांच्या निधनाने सोलापूर आर्य समाजासह सामाजिक क्षेत्राची हानी झाली आहे.

त्यांच्या पार्थिवावर पं.राजवीर जी शास्त्री यांच्या प्रमुख पौरोहित्याखाली पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. यावेळी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, उपमंत्री श्री शंकरराव बिराजदार व स्थानिक आर्य समाजाच्या पदाधिकाऱ्यांनी श्रद्धांजली वाहिली.

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना प्रांतीय सभा व सर्व आर्य समाजांची भावपूर्ण श्रद्धांजली..! शोकाकुल कुटुंबियांच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत.

- श्रावणी कार्यक्रम के चित्र -

धारुर आर्य समाज के श्रावणी पर्व पर यज्ञ करते हुए यजमान एवं आचार्य सानन्दजी!

हदगांव में श्रावणी वेदप्रचार के अवसर पर आचार्य यशवीरजी, नेत्रपालजी व याज्ञीक ।

जालना के श्रावणी पर्व पर विद्वान ॲड.जोगेन्द्रसिंह चौहान एवं आर्यजन।

REG.No.MAHBIL/2007/7493*
*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

सेवा में,
श्री. ______________________________

____

____

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थानपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया ।

मातृ देवो भव !

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि !

||ओ३म् ||

महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम अनुयायी, वैदिक सिद्धान्तों के अध्येता
दानशूर आर्य कार्यकर्त्ता श्री समाधान लक्ष्मीकांतजी पाटिल
व सौ. कविता समाधान पाटिल
मु. पो. सावखेडा (खुर्द) ता. जि. जलगांव एवं पाटिल परिवार
की ओर से अपनी पूजनीया दादीमाँ
स्व. श्रीमती गुंढरबाई किशनरावजी पाटिल
इनकी पावन स्मृति में
वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट